राज्ञा प्रलापानि. 2) lamentari, deplorare aliquem. R. Schl. I. 1. 33.: विलपन् सुतम्.

लपन *n.* (r. लप् s. अन) os, oris. AM.

लब्ध v. लभ् (gr. 83.).

लभ् 1. *A. interdum P.* adipisci, obtinere. BH. 4. 39.: ज्ञानं लभते; 11. 33.: यशो लभस्व; SA. 5. 31.: स्वम् एव राज्यं लभतां स पार्थिवः; IN. 3. 9.: ना 'लभच् छर्म; 5. 59.: मुदम् परमिकां लेभे; R. Schl. I. 10. 10.: लप्स्यते च ततः कामम् ऋषिपुत्रात्; 15. 14.: तासु त्वम् लप्स्यसे पुत्रान्. Concipere गर्भम् foetum. MAH. 3. 10496.: सर्वाश्च गर्भान् अलभन्. — *Caus.* लम्भयामि (gr. min. ed. 2. 471. 5.) facere ut quis adipiscatur, dare, *inde* tradere, *c. acc. pers. et rei.* RAGH. 18. 8.: पुत्रम् ... क्ष्मां लम्भयित्वा; MAH. 2. 1529.: देहभेदश्च लम्भितः. — *Desid.* लिप्स् (gr. 552.) obtinere cupere. MAN. 7. 99.: अलब्धश्चै 'व लिप्सेत लब्धं रक्षेत्. (Cf. रभ्, gr. ΛΑΒ, λαμβάνω, quod insertâ nasali convenit cum Caus. लम्भयामि et *Pass.* praet. multif. 3. p. अलम्भि; lith. *laba-s* bonus, *lóbis* «Hab' und Gut», boruss. vet. *labba-s* bonum, possessio = लाभ, Nom. लाभस्, *lab-s* bonus; *pal-lapsitwei, pal-laipsitwei* appetere, desiderare ad Desid. लिप्स् e लिलप्स् referri potest; slav. *lov-i-ti* captare; hib. *lamh* manus, a sumendo dictum esse censeo, sicut gr. χείρ convenit cum हृ i. e. हर् sumere; *mh* = भ् sicut in *neamh* = नभस्, v. Pictet p. 50, 51.

c. अभि *Desid.* अभिलिप्सामि sumere, tollere cupio. MAH. 1. 2940.: सा 'गच्छत् त्वरिता भूमिं वासस् तद् अभिलिप्सती.

c. आ 1) tangere. MAN. 11. 202.: गाम् आलभ्य विशुध्यति. 2) occidere (?). SA. 5. 99.: न जीविष्ये वरारोहे सत्येना "त्मानम् आलभे. *V.* आलम्भ.

c. आ praef. उप 1) adipisci, obtinere. SAK. 14. 13.: तत्त्वत एनाम् उपालप्स्ये. 2) vituperare, reprehendere. SA. 5. 84.: मात्रा पित्रा च ... उपालब्धः सुबहुशश् चिरेणा "गच्छसी 'ति ह; RAGH. 7. 41.

c. आ praef. सम् tangere, mulcere. R. Schl. I. 29. 25. 41. 23. II. 25. 35.

c. उप 1) adipisci; concipere (utero). R. Schl. I. 15. 25.: गर्भान् उपलेभिरे शुभान्. 2) percipere, animadvertere, videre, intelligere. N. 8. 3.: नलश्च हृतसर्वस्वम् उपलभ्य; 11. 35.

c. प्र decipere. N. 14. 5. 13. 15.

c. प्र praef. वि 1) *id.* SAK. 107. 9. 2) violare. MAH. 3. 223.: स वै धर्मो विप्रलब्धः ... पापात्मभिः.

c. प्रति recuperare. MAH. 3. 712.: प्रतिलभ्य च चेतनाम्.

लम्ब् 1. *A. interdum P.* (scribitur लब्, gr. 110[a]) labi, cadere, praecipitare, incidere. MAH. 1. 1038.: तेन लम्बामहे गर्ते; 2. 2187.: प्रपाते त्वं लम्बमानो न वेत्सि; 3. 8555.: गर्तम् एतम् अनुप्राप्ता लम्बामः; R. Schl. II. 40. 21.; DR. 6. 18.: वृक्षाश्च लम्बन्ति तथै 'व भग्नाः. Occidere, *de sole,* R. Schl. I. 33. 20.: लम्बमाने दिवाकरे; 65. 34.: लम्बते रविमण्डलम्. — *V.* लम्बय्. (Cf. lat. *lâbor, lâbo*; lith. *rambùs*, v. praef. वि; de *remju, remjô-s* v. praef. अव.)

c. अव 1) *i. q. simpl.* MAH. 1. 1035.: अवलम्बन्ते गर्ते; 4. 1040.: सूर्ये ऽवलम्बति. 2) inniti, *c. acc.* UR. 8. 16: राजानम् अवलम्बते; R. Schl. II. 52. 51.: त्वया त्व् इदानीम् ... राजत्वम् अवलम्ब्यताम्; HIT. 32. 17.: येन ... नैराश्यम् अवलम्बितम्. Prehendere. RAGH. 7. 9.: हस्तेन तस्थाव् अवलम्ब्य वासः (schol. गृहीत्वा). — *Caus.* fulcire, sustentare, sustinere. UR. 33. 3. infr. बुभुक्षितस्य मे जीवितम् अवलम्बयतु भवान्. (Cf. lith. *remju* fulcio, *remjô-s* innitor, *ramtis, ramstis* fulcrum.)

c. अव praef. सम् fulcire. MAH. 3. 10988.: बाहुभ्याम् ... ऊरू समवलम्बत.

c. आ 1) fulcire. MAH. 3. 10989.: आलम्बमाना सहितावूरू. 2) prehendere. BHATT. 14. 95.: आललम्बे महास्त्राणि (schol. G'. गृहीतवान्, BH. जग्राह).

c. आ praef. सम् 1) inniti, morari. HIT. 44. 9.: जनपदे लक्ष्मी समालम्बताम्. 2) prehendere. BHATT. 11. 1.: समालम्बे (*Pass.*) ... पद्मैः प्रहासः.

c. उत् उल्लम्बित erectus. MR. 68. 3.

c. उत् praef. सम् समुल्लम्बित *id.* MR. 68. 10.